रिपोर्ट समारोह - 8

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी : प्रवासी अनुभव और साहित्य

(18 अप्रैल 2022)

इस प्रोग्राम में मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ प्रदीप कुमार, अधिष्ठाता छात्र कल्याण और मुख्य वक्ता श्रीमती सुरजीत कवित्री और कहानीकारा कनेडा, विशिष्ट अतिथि श्रीमती हरकी बिर्क, कवित्री और कहानीकारा आस्ट्रेलिया रहे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. बृहस्पति मिश्र, विभागाध्यक्ष पंजाबी एवं डोगरी विभाग ने की। इस समागम में प्रवासी साहित्य और प्रवासी साहित्यकारों के जीवन का अनुभव विद्यार्थियों के साथ साँझा किया गया। इस कार्यक्रम में 65 लोग उपस्थित रहे।

अध्यक्ष, पंजाबी एवं डोगरी विभाग
Head, Department of Punjabi & Dogri
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215
Dhauladhar Parisar-1 Dharamshala-176215

- 8 समरोह 18-04-2022 अंतरराष्ट्रीय संगोष्टी प्रवासी अनुभव और साहित्य

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਸਭਾ

ਪੰਜਾਬੀ ਅਤੇ ਡੋਗਰੀ ਵਿਭਾਗ

ਹਿਮਾਚਲ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਸ਼ਵਵਿਦਿਆਲਾ, ਧਰਮਸ਼ਾਲਾ

ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸੈਮੀਨਾਰ

ਪ੍ਰਵਾਸੀ ਅਨੁਭਵ ਤੇ ਸਾਹਿਤ

ਮਿਤੀ 18 ਅਪ੍ਰੈਲ 2022, ਸਮਾਂ ਸਵੇਰੇ 10:30 ਵਜੇ

ਸਥਾਨ : ਸਭਾਗਾਰ, ਧੌਲਾਧਾਰ ਪਰਿਸਰ-1

ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ
ਡਾ.ਪ੍ਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ
ਡੀਨ, ਯੁਵਕ ਭਲਾਈ

ਮੁੱਖ ਵਕਤਾ
ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੁਰਜੀਤ
(ਕਵਿਤਰੀ ਤੇ ਕਹਾਣੀਕਾਰਾ, ਕੈਨੇਡਾ)

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵਕਤਾ
ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਹਰਕੀ ਵਿਰਕ
(ਕਵਿਤਰੀ ਤੇ ਕਹਾਣੀਕਾਰਾ, ਆਸਟ੍ਰੇਲੀਆ)

ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ
ਡਾ. ਬ੍ਰਹਿਸਪਤੀ ਮਿਸ਼ਰ
ਮੁਖੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਅਤੇ ਡੋਗਰੀ ਵਿਭਾਗ

ਡਾ. ਨਰੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ
ਕਨਵੀਨਰ

ਡਾ. ਹਰਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ
ਕੋ-ਕਨਵੀਨਰ

ਸਵਾਗਤ ਕਰਤਾ : ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਸਭਾ

पंजाबी साहित्य सभा

पंजाबी एवं डोगरी विभाग

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रवासी अनुभव और साहित्य

दिनांक :- 18 अप्रैल 2022 समय : 10:30 बजे सुबह

स्थान : सभागार, धौलाधार परिसर-1

मुख्य अतिथि
डा. प्रदीप कुमार
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण)

मुख्य-वक्ता
श्रीमती सुरजीत
(कवयित्री और कहानीकारा, कनाडा)

विशिष्ट-वक्ता
श्रीमती हरकी विर्क
(कवयित्री ओर कहानीकारा, आस्ट्रेलिया)

अध्यक्षता एवं समन्वयक
डा. बृहस्पति मिश्र
विभागाध्यक्ष, पंजाबी एवं डोगरी विभाग

डा. नरेश कुमार
संयोजक

डा. हरजिन्द्र सिंह
सह–संयोजक

स्वागत कर्ता: पंजाबी साहित्य सभा

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਸਭਾ
ਪੰਜਾਬੀ ਅਤੇ ਡੋਗਰੀ ਵਿਭਾਗ
ਹਿਮਾਚਲ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਸ਼ਵਵਿਦਿਆਲਾ, ਧਰਮਸ਼ਾਲਾ
ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸੈਮੀਨਾਰ ਪ੍ਰਵਾਸੀ ਅਨੁਭਵ ਤੇ ਸਾਹਿਤ
ਮਿਤੀ 18 ਅਪ੍ਰੈਲ 2022, ਸਮਾਂ ਸਵੇਰੇ 10:30 ਵਜੇ / ਸਥਾਨ : ਸਭਾਗਾਰ, ਧੌਲਾਧਾਰ ਪਰਿਸਰ-1
ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ
ਡਾ.ਪ੍ਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ
ਡੀਨ, ਯੁਵਕ ਭਲਾਈ
ਮੁੱਖ ਵਕਤਾ
ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੁਰਜੀਤ
ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵਕਤਾ
ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਹਰਕੀ ਵਿਰਕ
(ਕਵਿਤਰੀ ਤੇ ਕਹਾਣੀਕਾਰਾ, ਆਸਟ੍ਰੇਲੀਆ)
पंजाबी साहित्य सभा
पंजाबी एवं डोगरी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रवासी अनुभव और साहित्य
डा. प्रदीप कुमार
GLOBUS

केंद्रीय विवि के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

धर्मशाला , (आपका फैसला)। लब्ज जब खौरू पौंदे ने तद कलम बगावत करदी है, औदों रूह मेरी कविता लिखण दी हामी भरदी है। यह पंक्तियां हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर एक के सभागार में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान कवयित्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने कहीं। सोमवार को पंजाबी साहित्य सभा और केंद्रीय विवि के पंजाबी एवं डोगरी विभाग के सौजन्य से आयोजित इस संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि विवि के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रोण् प्रदीप कुमार, मुख्य वक्ता कवयित्री और कहानीकारा सुरजीत कौर, विशिष्ट वक्ता कवयित्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने शिरकत की। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता पंजाबी एवं डोगरी विभाग के अध्यक्ष डा. बृहस्पति मिश्र ने की। संगोष्ठी के संयोजक डा. नरेश कुमार और सह.संयोजक डा. हरजिंद्र सिंह रहे। इस मौके पर काफी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं शोधार्थी मौजूद रहे। प्रवासी जीवन और साहित्य विषय पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मुख्य वक्ता कवयित्री और कहानीकारा सुरजीत कौर ने अपने प्रवासी जीवन के अनुभव शोधार्थियों के साथ सांझा किए। उन्होंने काव्य पाठ भी किया। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में अब पंजाबी साहित्य को बहुत महत्व दिया जा रहा है। युवा वर्ग की काफी रूचि है। बहुत सारे युवा आज विदेशों में पढ़ाई के लिए जा रहे हैं। लेकिन वहां जाकर सब कुछ बदल जाता है, वह वहां की भाषाए रहन-सहन को अपना लेते हैं। यह सही नहीं हैं। हम विदेशों में अपने बच्चों को अपनी भाषा में बोलना सीखाते हैं, लेकिन जब भारत लौट कर आते हैं, तो यहां के स्कूलों में अंग्रेजी या हिंदी में बात करने के लिए बच्चों को कहा जाता है। यह सही नहीं है। इस मौके पर उन्होंने अपनी कविताएं भी शोधार्थियों के साथ सांझा कीं । इसी तरह से विशिष्ट वक्ता कवयित्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने भी बताया कि वह कैसे ऑस्ट्रेलिया गई और किस तरह उनका अनुभव रहा हैए इसके बारे में बताया। उन्हें किस तरह की दिक्कतों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ाए इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने अपने जीवन के उन अनुभवों को साझा किया जिसमें वह कलम के माध्यम

पंजाबी साहित्य में युवाओं की काफी रुचि : सुरजीत

संवाद सहयोगी, धर्मशाला : हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर-एक में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पंजाबी साहित्य सभा और केंद्रीय विवि के पंजाबी एवं डोगरी विभाग के सौजन्य से आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि विवि के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रदीप कुमार, मुख्य वक्ता कवयित्री और कहानीकारा सुरजीत कौर, विशिष्ट वक्ता कवियत्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने शिरकत की। संगोष्ठी की अध्यक्षता पंजाबी एवं डोगरी विभाग के अध्यक्ष डा. बृहस्पति मिश्र ने की। संगोष्ठी के संयोजक डा. नरेश कुमार और सह-संयोजक डा. हरजिंद्र सिंह रहे।

सुरजीत कौर ने प्रवासी जीवन के अनुभव साझा किए। उन्होंने काव्य पाठ भी किया। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में अब पंजाबी साहित्य को बहुत महत्व दिया जा रहा है। युवा वर्ग की काफी रुचि है। बहुत युवा आज विदेशों में पढ़ाई के लिए जा रहे हैं, लेकिन वहां जाकर सब कुछ बदल जाता है, वह वहां की भाषा, रहन-सहन को अपना लेते हैं। यह सही नहीं हैं।

हम विदेशों में अपने बच्चों को अपनी भाषा में बोलना सीखाते हैं लेकिन जब भारत लौट कर आते हैं तो यहां के स्कूलों में अंग्रेजी या हिंदी में बात करने के लिए बच्चों को कहा जाता है। यह सही नहीं है। इस मौके पर उन्होंने अपनी कविताएं भी शोधार्थियों के साथ सांझा कीं।

हरकी विर्क ने बताया कि वह कैसे आस्ट्रेलिया गईं और किस तरह उनका अनुभव रहा है, इसके बारे में बताया। उन्हें किस तरह की दिक्कतों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, इसके बारे में जानकारी दी। प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने कहा कि जिस प्रकार इन प्रवासी साहित्यकारों ने आज अपने अनुभव छात्रों के साथ साझा किए हैं इनसे जरूर कुछ न कुछ सीखेंगे।

केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में मौजूद मुख्य अतिथि व अन्य ● जागरण

विदेशों में अपनी संस्कृति भूल रही युवा पीढ़ी

सीयू के धौलाधार परिसर में सजी संगोष्ठी में कवयित्री सुरजीत कौर ने साझा किया प्रवासी अनुभव

दिव्य हिमाचल ब्यूरो- धर्मशाला

● कनाडा और आस्ट्रेलिया की प्रवासी कवयित्रियों कहानीकारों ने लिया हिस्सा

'लब्ज जब खौरू पौंदे ने तद कलम बगावत करदी है, औदों रूह मेरी कविता लिखण दी हामी भरदी है'। यह पंक्तियां हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर एक के सभागार में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान कवयित्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने कही। सोमवार को पंजाबी साहित्य सभा और केंद्रीय विवि के पंजाबी एवं डोगरी विभाग के सौजन्य से आयोजित इस संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि विवि के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रदीप कुमार, मुख्य वक्ता कवयित्री और कहानीकारा सुरजीत कौर, विशिष्ट वक्ता कवयित्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने शिरकत की। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता पंजाबी एवं डोगरी विभाग के अध्यक्ष डा. बृहस्पति मिश्र ने की। संगोष्ठी के संयोजक डा. नरेश कुमार और सह-संयोजक डा. हरजिंद्र सिंह रहे।

इस मौके पर काफी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं शोधार्थी मौजूद रहे। प्रवासी जीवन और साहित्य विषय पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मुख्य वक्ता कवयित्री और कहानीकारा सुरजीत कौर ने अपने प्रवासी जीवन के अनुभव शोधार्थियों के साथ सांझा किए। उन्होंने काव्य पाठ भी किया। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में अब पंजाबी साहित्य को बहुत महत्व दिया जा रहा है। युवा वर्ग की काफी रूचि है। बहुत सारे युवा आज विदेशों में पढ़ाई के लिए जा रहे हैं। लेकिन वहां जाकर सब कुछ बदल जाता है, वह वहां की भाषा, रहन-सहन को अपना लेते हैं। यह सही नहीं हैं। हम विदेशों में अपने बच्चों को अपनी भाषा में बोलना सीखाते हैं लेकिन जब भारत लौट कर आते हैं तो यहां के स्कूलों में अंग्रेजी या हिंदी में बात करने के लिए बच्चों को कहा जाता है। यह सही नहीं है। इस मौके पर उन्होंने अपनी कविताएं भी शोधार्थियों के साथ सांझा कीं।

इसी तरह से विशिष्ट वक्ता कवयित्री और कहानीकारा हरकी विर्क ने भी बताया कि वह कैसे ऑस्ट्रेलिया गईं और किस तरह उनका अनुभव रहा है, इसके बारे में बताया। उन्हें किस तरह की दिक्कतों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने अपने जीवन के उन अनुभवों को साझा किया जिसमें वह कलम के माध्यम से अपना दुःख साझा करने के लिए मजबूर हो गई। इस मौके पर डा. नंडूरीराज गोपाल, संस्कृत विभाग के सभी प्राध्यापक और शोधार्थी मौजूद रहे।